ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०५
दिनांक- मंगलवार, १७ जनवरी, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 18.9 एवं 7.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 99 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 67 प्रतिशत, हवा की औसत गति 3.2 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.1 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 3.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 10.2 एवं दोपहर में 20.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(18–22 जनवरी, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 18–22 जनवरी, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। अगले 2–3 दिनों तक ठंड का प्रकोप बने रहने की सम्भावना है। सुबह में हल्का कुहासा छा सकता है। दिन में मौसम साफ रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 6 से 8 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- इस पूर्वानुमानित अवधि में लगातार पछिया हवा, 5 से 7 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पिछात गेहूँ में दीमक कीट का प्रकोप दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर शाम के समय खेत में छिड़काव कर सिंचाई करें। बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की 21 से 25 दिनों की फसल में सिंचाई कर 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें।
- पिछात फूलगोभी, पत्तागोभी, गाजर, मूली, मटर,बैंगन, टमाटर एवं मिर्च फसलों में निराई–गुराई एवं सिंचाई करते रहें। इन फसलों में रोग–व्याधि से बचाव हेतु कार्बेन्डाजीम (वेविस्टीन)/ 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर समान रुप से छिड़काव करें। गरमा सब्जी की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट की निगराणी करे। इस कीट के मैगट सर्वप्रथम अरहर के पौधे के तने में छेद करके उसे खाते है। जिससें पौधे के तने एवं शाखाये सुखने लगती है। बाद में दाना आने पर बीजों को खाते है। जिस स्थानों पर मैगट खातें है, वहॉ कवक एवं जीवाणु उत्पन हो जाते है। फलस्वरूप ऐसे दाने खाने योग्य नही रह जाते है और उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। विलम्ब से बोई गयी दलहनी फसल में 2 प्रतिषत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार करें।
- मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें। इस रोग में पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से वचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का 3 ग्रम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। मटर में नियमित रुप से फली छेदक कीट की निगरानी करें।
- आम एवं लीची के बागों में निकाई–गुड़ाई नहीं करे। ऐसा करने से पेड़ों में पुष्पण की क्रिया तथा फलन प्रभावित होगा। अभी बागों में सिंचाई ना करें, इससे पौधो में फलों के जगह नए पत्ते निकलने की संभावना बढ़ जाती है।
- खेतों में कम नमी को देखते हुए किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि सब्जियों की फसल में सिंचाई करें। फ्रेंचबीन, पालक, मटर, फुलगोभी आदि फसलों पर सिंचाई करें एवं फॅफुदनाषक दवा का प्रयोग करें। अगर पत्तियों पर रोग के धब्बे दिखाई दें, तो मैन्कोजेब दवा का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करे।
- आलू की फसल की नियमित निरीक्षण करें। अभी इस फसल पर झुलसा रोग का अधिक प्रकोप होने की संभावना है। बचाव के लिए रिडोमिल नामक दवा का 1. 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। खेतों में नमी को देखते हुए आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। टमाटर, मटर एवं मक्का की फसल में आवष्यकतानुसार सिंचाई करें।
- मक्का की फसल में आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। सिंचाई के बाद 25–30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें, जिससे कम तापमान तथा शीतलहर के प्रभाव से फसल पर हुए नुकसान को कम किया जा सके।
- मिर्च की फसल में थ्रिप्स कीट की निगरानी करे। इसके शिशु/वयस्क कीट सैकड़ो की संख्या में पौधो की पत्तियो की निचली सतह पर छिपे रहते हैं और कभी–कभी उपरी सतह पर भी देखे जा सकते हैं। ये पत्तियो, कलियो व फूलो का रस चुसते है। यह कीट मिर्च में बांझी/विषाणु रोग फैलाता है। इससे बचाव हेतु इमिडक्लोप्रीड 17.8 ई0सी0 का 1 मि0ली0 या डायमेथोएट 30 ई0सी0 का 2 मि0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- चने एवं टमाटर की फसल में फलीछेदक कीट के नियंत्रण हेतु फिरोमोन प्रपंश/3–4 प्रपंस प्रति एकर की दर से उन खेतों में लगायें।
- पशुपालक भाई दूधारु पशुओं के रख–रखाव एवं खान–पान पर विषेश ध्यान दें। हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से 50 ग्राम नमक, 50 से 100 ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। दुधारु पशुओं के दूध उत्पादन में आयी कमी को दूर करने के लिए नियमित रुप से कैल्सियम की सूई दिलायें अथवा तरल कैल्सियम खिलायें।

आज का अधिकतम तापमानः 20.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.0 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 5.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.3 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)